ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
PP. NO.- 354-357
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

प्रभा खेतान के कथा साहित्य में चित्रित नारी

डा0 सपना भूषण
एसोसिएट प्रोफेसर– हिंदी विभाग, वसंत कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी (उ0प्र0), भारत।

Received- 22.05.2019, Revised- 26.05.2019, Accepted - 30.05.2019 E-mail: - sapnabhushanvkm@gmail.com

सारांश : *मानव जाति प्रारंभ से ही प्रकृति से जुड़ा हुआ है। प्रकृति एक कलात्मक संयोजन है। इसके विभिन्न अवयव कलात्मक रूपाकृतियाँ जो उसकी विराटता और विविधता को दर्शाते हैं। प्रकृति के इन कलात्मक अवयवों का अनुकरण,अवगाहन और अनुसंधान मनुष्य के,आकर्षण का केंद्र आदिकाल से रहा है। स्वयं मानव जाति भी प्रकृति का ही एक विशिष्ट कलात्मक अवयव है।विचारशीलता और प्रज्ञा से संपन्न मानव प्रकृति के नाना रूप कलात्मक अवयवों का विचारपूर्ण अध्ययन,चिंतन और मनन करता है तथा साथ ही उस पर मानवीय भावनाओं का आरोपण कर उसका विभिन्न विषयों और अनुशासनों के संदर्भ में भिन्न–भिन्न देशकाल और वातावरण में अनुशीलन करता है। ताकि उसके अनेक अनुत्तरित प्रश्नों का कुछ सम्यक हल निकल सके। यह अध्ययन जितना बाह्य है, उतना ही अंतवर्ती भी, क्योंकि मनुष्य एक विचारशील प्राणी है।भावना और विचार जितने द्वंदपूर्ण है, उतने ही एक दूसरे के समायोजी और पूरक भी। इनके द्वंद से कभी कोई प्रश्न हल हो जाते हैं तो कभी–कभी सदैव के लिए प्रश्नांकित होकर अपूर्ण बने रहते हैं। यह प्रश्नवाचक द्वंद, निरंतर मानव मन को उद्वेलित करते रहते हैं। जो मानव प्रकृति के अनुसार स्वाभाविक ही है। जो मनुष्य के अपने अस्तित्व, पहचान, मूल्य, कर्तव्य व अधिकार इत्यादि के प्रति सजग होने का द्योतक है। प्रश्नावान बने रहने का तात्पर्य अपने प्रश्नों के प्रति तरल, सजग, उत्तरदायी एवं आस्थावान होना है। जो आधुनिकता और पूर्णता का द्योतक है।*

कुंजीभूत शब्द– कलात्मक संयोजन, कलात्मक रूपाकृतियाँ, विराटता, विविधता, अनुकरण, अवगाहन ।

'प्रभा खेतान' ऐसे ही आधुनिक युग की महिला साहित्यकारों में अपना एक सशक्त हस्ताक्षर छोड़ती है। नारी पर होने वाले अत्याचार शोषण उत्पीड़न इत्यादि के खिलाफ आवाज उठाती हुई, प्रभा खेतान हिंदी साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनती है। इन्होंने हिंदी साहित्य जगत को 'आओ पेपर घर चले, तालाबंदी, अग्निसंभवा, ऐड्स, छिन्नमस्ता पीली आंधी, अपनी–अपने चेहरे एवं स्त्री पक्ष' जैसे अनेक चर्चित उपन्यास दिए हैं इन उपन्यासों में नारी जीवन उनकी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियां प्रेम और विवाह जैसी विषयों पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया गया है। जितनी इनके उपन्यास चर्चा में रहें, उतनी ही इनके काव्य संग्रह भी पाठकों की रोचकता एवं चर्चा का विषय रहा। 'सीढ़ियां चढ़ती रही मैं, एक और आकाश की खोज में, कृष्णधर्मा मैं तथा हुस्नबानो'आदि इनकी कुछ चर्चित व प्रमुख कविताएं हैं।प्रभा जी के साहित्य से प्रतीत होता है कि नारी समस्या का समाधान करना उनका उद्देश्य बन गया है ।वह अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन को व्याख्यायित करते हुए उसकी स्वतंत्रता की हिमायती या समर्थक प्रतीत होती हैं। प्रभा जी स्त्री की पराधीनता से काफी चिंतित हैं 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में वह कहती हैं –

''औरत कहाँ नहीं रोटी? सड़क पर झाड़ू लगाते हुए, खेतों में काम करते हुए,एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करती हुई या फिर सारे भोग–ऐश्वर्य के बावजूद मेरी सासू जी की तरह पलंग पर रात–रात भर अकेले करवट बदलते हुए। हाड़– मांस की बनी ये औरतें.... अपने–अपने तरीके से जिंदगी जीने की कोशिश में छटपटाती ये औरतें! हजारों सालों से इनके ये आँसू बहते आ रहे हैं''[1]

प्रभा जी स्वतंत्र स्त्री की समर्थक है। इनका संपूर्ण साहित्य, स्त्री स्वतंत्रता की मांग करता है। इन्होंने स्त्री के पराधीनता को बहुत ही करीब से देखा है क्योंकि बचपन में ही इन्होंने अपनी माँ को जींदगी से जूझते हुए देखा। एक तरफ उन्होंने मारवाड़ी परिवार में नारी की व्यथा को देखा,तो दूसरी तरफ स्त्री को टूटते हुए।यही कारण है कि उनके मन में पुरुष व्यवस्था के खिलाफ प्रतिशोध ने जन्म लिया । स्त्री को स्वतंत्र करने का संकल्प उन्होंने बचपन में ही ले लिया था इसीलिए प्रभा टी केतन अपने साहित्य में स्त्री स्वतंत्रता का पूर्ण समर्थन करते हुए कहती हैं–

''नारीवाद न मार्क्सवाद है और न पूंजीवाद, स्त्री हर जगह है हर वाद में, फैलाव में है, मगर संस्कृति के विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण की शिकार है, वस्तुकरण की इस पारंपरिक प्रक्रिया को पुरुष दृष्टि से नहीं बल्कि स्त्री दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है''[2]

प्रभा जी का जीवन अत्यंत ही संघर्षरत रहा ,बचपन

से ही वह घर और समाज में पुरुषों से संघर्ष करती रही। तमाम संघर्षों के बावजूद वह अपने मुकाम पर प्रतिष्ठित हुई। समाज में पुरुषों की आक्रामकता इतना बढ़ गई है कि कोई भी स्त्री अपने घर से अकेले बाहर नहीं निकल सकती है। पुरुषों ने ही स्त्री को कमजोर बना दिया है लेकिन कुछ महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि हम पुरुषों से कम नहीं हैं।

"लेखिकाओं ने जहां जीवन के छोटे बड़े सच, सुख–दुःख रचनाओं में उकेरे हैं,वहीं समय के ज्वलंत प्रश्नों से भी वे टकराईं।आज भी नारी हिंदी साहित्य में सक्रिय भागीदारी निभा रही है तथा अपने विशेष भूमिका द्वारा साहित्य में स्थान बनाते हुए जगत में पुरुष के समानांतर पहुँच गई हैं।"[३]

प्रभा खेतान इस पुरुषवादी समाज की व्यवस्था से, परंपरागत नियम एवं बंधन से बिल्कुल सहमत न थी।वह परंपरागत नियम व बंधन जो एक स्त्री को पुरुषों के समान अधिकार देने में असमर्थ है,जो पुरुषों के समानांतर आगे बढ़ाने में असमर्थ है,जो स्त्रियों के पैरों में बेड़िया डाल देती है, उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं,उसे वह सम्मान वह अधिकार नहीं दिलाती जिसकी वह अधिकारी है।

भारतीय परंपरा में नारी को पुरुष प्रधान संस्कृति ने नारकीय जीवन जीने के लिए बाधित किया। कभी धर्म का,कभी शास्त्र का, कभी पुराण का, कभी वेदों का तो कभी सूक्तो का भय दिखा कर स्त्रियों को समाज ने सदैव विभिन्न कर्मकांड से वंचित रखा।वैदिक काल में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। परंतु मनु ने नारी के संबंध में कई कड़े नियम बनाएं और उसे गुलाम की जिंदगी जीना पड़ा। हर स्त्री हर जगह अपेक्षित रही।प्राचीन काल में कई कुप्रथाएं प्रचलित थीं। विधवाओं को पति के साथ अपनी आहुति देनी पड़ती थी, उसे अपने घर से निकलने नहीं दिया जाता था,महिलाओं को पुरुष अपनी दासी बना कर रखता था। प्रभा खेतान इसी व्यवस्था के खिलाफ थी।अरविंद जैन लिखते हैं "सामंती व्यवस्था में नारी एक वस्तु है,संपत्ति है, संभोग और संताप की इच्छा पूरी करने वाली मादा है।"[४]

किंतु प्राचीनकाल की तुलना में स्वतंत्र युग में नारी की स्थिति में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं।समाज सुधारको के अथक प्रयासों के माध्यम से नारी पर होने वाले अत्याचार न केवल कम हुए अपितु कुछ अत्याचार व रुढ़ रीति–रिवाज को पूर्ण रूप से समाप्त भी कर दिया गया। समकालीन महिला लेखन के प्रयासों से खुद महिला जागृत हो गई है।यह युग नारी मुक्ति,आंदोलन और जागरण का युग है।आज की नारी ने अपनी आंतरिक शक्ति को पहचान लिया है,वह आज शिक्षित भी है और विभिन्न कार्यक्षेत्र में कार्यरत होकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा रही है।

प्रभा जी ने मुख्यतः मारवाड़ी समाज की स्त्री को केंद्र में रखकर अपने उपन्यास साहित्य की रचना की है।मारवाड़ी स्त्री की विविध पहलुओं का वर्णन करने के साथ–साथ विदेशी स्त्री के जीवन के भयानक सच को भी उन्होंने अपने उपन्यासों में बहुत ही बारीकी से उकेरा है। भारतीय परंपरा के मारवाड़ी समाज की स्त्री हो या आधुनिकता में लिप्त पाश्चात्य समाज की स्त्री हो या उनके जीवन से जुड़े विविध पहलुओं को,हम उनके उपन्यासों की स्त्री पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं में करीब से देख सकते है। जैसे कि 'रमा' 'अपने– अपने चेहरे' उपन्यास की नायिका है। जो सारे उपन्यास में दूसरी उपेक्षित औरत की पीड़ा, अंतरद्वंद्व और आत्म चिंतन से ग्रसित है। रमा के माध्यम से प्रभा जी ने स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को परिभाषित करने का भरसक प्रयास किया है। रमा अपने से 18 साल के बड़े शादीशुदा तीन बच्चों के पिता राजेंद्र गोयनका से प्रेम कर लेती है। रमा राजेंद्र जी की सेक्रेटरी बनकर उनके परिवार के लिए अथक परिश्रम करती थी।वह गोयनका परिवार के लिए अपने आप को मशीन बना लेती है, लेकिन मिस्टर गोयनका,रमा को चाह कर भी अपने परिवार का हिस्सा नहीं बना पाए। जिसके कारण रमा उस घर में रहते हुए दूसरी स्त्री होने का निरंतर दंश झेलती है। एक बार मिस्टर गोयनका 'रमा' को अपने साथ पार्टी में जाने के लिए कहते हैं परंतु समाज के डर से रमा नहीं जाती। वह कहती है "जिस संबंध का कोई नाम नहीं उस संबंध को समाज में ले जाने से फायदा ? मेरी अलग आइडेंटिटी रहने दीजिए।"[५]

समाज का डर रमा को खाए जा रहा है।वह स्वावलंबी स्त्री होते हुए भी समाज में उपेक्षित जीवन जीने के लिए विवश है।वह सोचती है –" यह कैसी जिंदगी मैं जी रही हूँ?... मैं छोड़ क्यों नहीं देती? मेरा परिचय क्या है? इस उम्र में? किसकी पत्नी, किसकी माँ? किस घर की बहू? मैं ना सधवा, न विधवा।"[६]

रमा को लगता है कि परंपरा ग्रसित दकियानूसी विचार वाला मारवाड़ी समाज उसे कभी स्वीकार नहीं करेगा।अंत में वह एक सच्चे दोस्त की तरह अपना फर्ज निभाते हुए राजेंद्र गोयनका का साथ निभाती है। इस संदर्भ में डॉक्टर अमर ज्योति लिखतीं हैं –" अपने–अपने चेहरे में रमा को सह पत्नी का स्थान प्राप्त है। जो विवाह संस्था को नकारती हुई भी अपना कर्तव्य निभाती है।"[७]

दूसरी औरत का दर्जा पाकर रमा अपने जीवन में घुटन का अनुभव करती है। फिर किसी तरह साहस करते हुए वह आगे बढ़ते हुए अपना अधिक से अधिक मन अपने काम में लगती है।वह जिंदगी के बड़े–बड़े फैसले लेने लगती है।

रमा दूर–दूर तक फैक्ट्री का व्यवसाय बढ़ा रही है, यात्राएं उसे अच्छी लगने लगी है।पूरे उपन्यास में स्त्री की समस्या को उजागर किया गया है। जो स्थिति रमा की है। वही रीतू की भी है,फर्क बस इतना है कि रीतू पति को छोड़कर भटक रही है तथा रमा विवाहित प्रेमी को पाने के लिए निरंतर प्रयासरत है एवं संघर्ष कर रही है। दोनों औरतें पुरुषवादी सत्ता से छली गई हैं। उन्हें न्याय कहीं नहीं दिखाई दे रहा है।रमा पुरुष वर्चस्व से आहत रीतू से कहती है– ''तराजू के पलड़ों का अलग–अलग वजन, फिर न्याय और अन्याय का द्वंद हम(स्त्री)क्यों उठाते हैं? न्याय है ही कहाँ? स्त्री पुरुष में समानता है ही कहाँ? एक सत्ता की कुर्सी पर बैठा हुआ अपने पूरे सामर्थ्य के साथ, दूसरा आंचल पसारकर न्याय की भी मांगती हुई उसके चरणों में झुकी हुई।''[८]

पुरुष सत्तात्मक समाज को आईना दिखाता हुआ यह उपन्यास निश्चित रूप से इस समाज को बदलने की ताकत रखता है। जरूरत है तो स्त्री को अपने हक के लिए, अपने अस्तित्व के लिए, अपने पहचान के लिए आवाज उठाने की, पुरुष के आगे सशक्त बनने की, उसके अस्तित्व के खिलाफ जो शोषित नियम कानून बनाए जा रहे हैं उन नियमों को तोड़ने की।रमा के हवाले से हर स्त्री को प्रभा खेतान आवाज देना चाहती हैं कि पहले तुम स्वावलंबी बनो, अपने आप को पहचानो,तब कोई विद्रोह करो। क्योंकि इससे पहले यदि तुम विद्रोह करोगी तो पुरुष द्वारा समाज से फेंक दी जाओगी। इस पर रीतू कहती है कि– तब विद्रोह न करें ? इस पर रमा जवाब में कहती है – ''क्यों नहीं लेकिन मजबूत तो बनो, पुरुष की जमीन पर खड़े होकर पुरुषों के खिलाफ बोलोगी तो उठाकर फेंक दी जाओगी। अपनी जमीन तैयार करो।''[९]

रीतू दो वर्षों तक अपने पति के साथ तनावपूर्ण जीवन जीने के पश्चात पति का घर छोड़कर मायके चली जाती है। वह अंदर ही अंदर कूढ़ना, जलना नहीं चाहती तथा ऊपर से हंसने का दिखावा करना पसंद नहीं करती है।वह ना ही दूसरी शादी करने के पक्ष में है और न ही तलाक देने के पक्ष में ।उसे लगता है कि क्या पता दूसरा पुरुष भी उसके पति कुणाल की तरह व्यवहार करें? इस संदर्भ में डॉक्टर कृष्णा जाखड़ भी लिखती है–'' वह अपना विद्रोह दर्ज कराती है,परंतु पति को वापस नहीं ला पाती, ऐसी सूरत में रीतू भी अपने पति के भटकाव के लिए दूसरी स्त्री को ही दोषी मानती है ।आम स्त्री धरणा के मुताबिक रीतू भी स्त्री के विरुद्ध खड़ी होती है।''[१०]

किंतु पति–पत्नी के झगड़ों में बच्चों का क्या दोष रीतू का बेटा माता–पिता के इन झगड़ों से बहुत दुखी है किंतु वह रीतू की गलती न होने पर भी, अपनी इस अवस्था का जिम्मेदार अपनी माँ को ही ठहरता है, जो पुरुष सत्तात्मक मानसिकता का एक और प्रतीक है। प्रभा जी की स्त्री कभी दयनीय बनकर प्रस्तुत नहीं होती, बल्कि वह जीवंतता के साथ संघर्ष करती है और अपनी भावात्मक उदारता को भी नहीं खोने देती।उनकी स्त्री में व्याप्त प्रेम उसका एक सहज अधिकार है,जिसे वह पूरे आत्मसम्मान से भोगती है, भले ही इसके प्रति समाज की धारणा असामान्य और नकारात्मक रही हो। उनकी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।वह औरत के वस्तु होते जाने के खिलाफ थी। इस विडंबना को वह व्यक्त करते हुए लिखती हैं– '' औरत इस हद तक वस्तु हो जाती है कि अपनी ही देह की एक–एक परत को दूसरों की नजर से तौलती रहती है और नापने– जोखने, तौलने के बाद की अतृप्ति, पूर्णता हासिल न कर पाने की हार और थकान औरत को तोड़कर रख देती है''[११]

स्त्री के इस रूप का चित्रण करने के साथ–साथ प्रभा जी दूसरी ओर स्त्री की स्वतंत्रता और आर्थिक निर्भरता की भी हिमायती नजर आती है और वह कहती हैं –'' औरत के आर्थिक अवदान को नकारने की परंपरा रही है। पहले गृहस्थी में उसके श्रम को नकारा जाता था फिर मुख्य धारा में यदि उसे स्थान दिया जाता था तब उस स्त्री को या तो अपवाद मानकर पुरुष वर्ग अपने कर्तव्य की इति श्री समझ लेता है या फिर उसे परे धकेल दिया जाता है।पर आने वाले वक्त में औरत की सबसे बड़ी लड़ाई इस मुख्य धारा में बने रहने की होगी।''[१२]

निष्कर्ष रूप में कहां जा सकता है कि विभिन्न महिला लेखिकाओं में प्रभा खेतान अपनी निर्भीक लेखनी के लिए जानी जाती हैं। प्रभा जी ने अपने उपन्यास की स्त्री पात्रों के माध्यम से समाज को स्त्री और पुरुष के बीच भेदभाव की स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री को समाज में अपना स्थान बनाने के लिए प्रेरित किया है। वह स्थान जो पुरुष उसे आसानी से नहीं देना चाहता, जिसके लिए उसे पुरजोर सफल संघर्ष करने की आवश्यकता है ।'अन्या से अनन्या' उनके जीवन यात्रा और नारीवादी दृष्टिकोण को दर्शाती है।यह आत्मकथा उनकी व्यक्तिगत संघर्षों और सामाजिक चेतना का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस पुरुष वर्चस्व समाज में आखिर कब तक स्त्री पुरुष की दासी बनी रहेगी? उसकी सर्जनात्मकता ,कलात्मक ही उसके शत्रु बन गए हैं। मर्यादाओं की कसौटी में केवल स्त्री को ही क्यों कसा जाता है? संदर्भ में उषा कीर्ति राणावत लिखती हैं–'' बहुत सी लेखिकाओं ने यह सोचा कि वह औरत की तरह नहीं बल्कि पुरुषों की तरह लिखेंगीं और ऐसी स्थिति में वह खुद अपनी दुश्मन बनी क्योंकि उन्होंने अपनी देह को नकारा। दूसरे शब्दों में या तो वह निष्क्रिय परी

बनी या फिर सक्रिय चुड़ैल।"[१३] इस मापदंड पर यदि हम विचार करें तो प्रभा जी ने खुद को और स्त्री के चरित्र को उकेर कर उसके मानवीय स्वरूप को बचाए रखा और इस संभावना को जीवित रखा कि दीये में तेल अभी भी बाकी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या –१८६.
२. हंसा, पत्रिका ,अक्टूबर–१९९६, पृ.सं.–७५.
३. समकालीन महिला लेखन एवं नई चेतना, संपादक– डॉ. गजाला वसीम अब्दुल बसीर,डॉ.बसंत कुमार गणपत माली,विकास प्रकाशन,कानपुर, संस्करण –२०१५,पृष्ठ संख्या–१६१.
४. औरत होने की सजा, अरविंद जैन, पृष्ठ संख्या– १८.
५. अपने–अपने चेहरे, प्रभा खेतान,किताब घर,दरियागंज, नई दिल्ली, सं. २००७, पृष्ठ संख्या– ६५.
६. अपने–अपने चेहरे, प्रभा खेतान, किताब घर, दरियागंज, नई दिल्ली,सं. २००७ ,पृष्ठ संख्या –७५.
७. हिंदी की महिला उपन्यासकार और नारीवादी दृष्टि, डॉ. अमर ज्योति, पृष्ठ संख्या–६७.
८. अपने–अपने चेहरे,प्रभा खेतान, किताब घर, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण २००७, पृष्ठ सं.– ६३.
९. अपने–अपने चेहरे,प्रभा खेतान, किताब घर, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण २००७ ,पृष्ठ सं.– १२७.
१०. डॉ. कृष्णा जाखड़, प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, पृष्ठ संख्या–१४४.
११. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन,प्रा. लि.नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–१७०.
१२. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन,प्रा. लि.नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–११२.
१३. प्रभा खेतान का औपन्यासित संसार ,उषा कीर्ति राणावत,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली पृष्ठ सं.–३९.

*****